प्रातःक्लास ओमशांति 16–7–67
रुहानी बाप बैठकर रुहानी बच्चों को समझाते हैं। जब पहले2 कोई को भी समझाते हो तो पहले यह क्लीयर कर दो कि बाप एक ही है। पूछना नहीं है कि बाप एक है वा अनेक। ऐसे तो फिर अनेक ही कह देंगे। कहना ही है बाप रचता गॉडफादर एक है। सभी आत्माओं का बाप है। पहले2 ऐसे भी नहीं कहना है कि वो बिंदी है। इसमें फिर मूंझ जावेंगे। पहले2 तो यह अच्छी रीति समझाओ कि बाप दो हैं– लौकिक और पारलौकिक। लौकिक तो हर एक का होता ही है। पारलौकिक सभी आत्माओं का एक ही बाप है। फिर शरीर में आते हैं तो सभी जीवात्माओं का बाप एक ही है। फिर उनको कोई खुदा,कोई गॉडफादर कहते हैं। है एक ही। सभी एक को ही याद करते हैं। पहले2 तो यह पक्का निश्चय कराओ। फादर है सर्व का रचने वाला। बाप यहां .....आवेंगे ही स्वर्ग का मालिक बनाने। जिसकी ही जयंति भी मनाते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग का रचता भारत में ही आकर स्वर्ग रचते हैं जिसमें देवी देवताओं का ही राज्य होता है। तो पहले2 बाप का ही परिचय देना है। उनका नाम है शिव। गीता में भगवानोवाच्य है ना। पहले2 तो यह निश्चय करवा कर लिखवा लेना चाहिए कि हां, बाप एक ही है। उनका नाम है शिव। बाकी है सारी रचना। पहले2 बाप का निश्चय करवा कर फिर गीता–खंडन सिद्ध करनी है। गीता में है शिव भगवानोवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ अर्थात् नर से नारायण बनाता हूँ। यह कौन बना सकते हैं?यही समझाना पड़ेगा कि भगवान कौन है। फिर यह भी समझाना होता है कि सतयुग में पहले नम्बर में जो ल.ना. हैं जरूर वो ही 84जन्म लेते होंगे। पीछे2 फिर और2 धर्म वाले आते हैं। उनके इतने जन्म हो नहीं सकते। पहले आने वालों के ही 84जन्म होते हैं। सतयुग में तो कुछ सीखते नहीं हैं। जरूर संगम पर ही सीखते होंगे। तो पहले2 बाप का परिचय देना है। जैसे आत्मा देखने में नहीं आती है ,(समझ)सकते हैं। वैसे ही परमात्मा को भी देख नहीं सकते हैं। बुद्धि से समझते हैं कि वो हम आत्माओं का बाप है। आत्मा छोटी–बड़ी नहीं होती है। बाप भी छोटा–बड़ा नहीं होता है। उनको कहा जाता है परमआत्मा। वो सदैव पावन है। उनको आकर पतित दुनियां को पावन बनाना होता है। तो पहले बाप एक है यही सिद्ध कर बताने पर गीता का भगवान कृष्ण नहीं है वो भी सिद्ध हो जावेगा। तुम बच्चों को सिद्ध कर दिखाना है यह सब भक्तिमार्ग के झूठे शास्त्र हैं। एक बाप को ही सच्चा2 कहा जाता है। भक्तिमार्ग के इन शास्त्रों आदि से तो उतरते ही आये हैं। पुनर्जन्म लेते2 कलायें कम होती जाती हैं। यह कर्मकांड के तीर्थ आदि की बातें सब भक्ति के ही शास्त्रों में हैं। ज्ञान में तो इनका कोई मतलब ही नहीं है। रिद्धी–सिद्धी इधर–उधर जाना करना यह सब शास्त्रों में है। यहां पर कोई शास्त्र (नहीं)है। बाप आकर सब राज समझाते हैं। आधा कल्प यह भक्तिमार्ग भी होना ही है। पहले2 तुम बच्चे ही जीत पावेंगे इस पर कि भगवान तो एक ही निराकार है ना कि साकार। परमपिता परमात्मा शिव भगवानोवाच्य है। ज्ञान का सागर सभी का बाप वो ही है। कृष्ण तो सभी का बाप हो नहीं सके। कृष्ण किसी को कह नहीं सके कि देह के सभी धर्म छोड़कर मामेकम् याद करो। है बहुत सहज सी बात ;परंतु मनुष्य शास्त्र आदि पढ़ भक्ति में पक्के हो गये हैं। आजकल तो शास्त्रों आदि को गाड़ी में रखकर परिक्रमा नहीं देते हैं। आगे बहुत देते थे। चित्रों को भी परिक्रमा दिलाते थे। ग्रंथ को भी उठाकर फिर .... लाकर सुलाते थे। अभी तुम बच्चे जानते हो हम देवता से क्षत्रिय,क्षत्रिय से वैश्य ,शूद्र बनते हैं। यह चक्र लगाते हैं। चक्र के बदले वो फिर परिक्रमा दिलाकर घर जाकर रखते हैं। उनका एक मुकर्रर दिन.....है जबकि दिखाते हैं चित्रों को बड़े धूम–धाम से। तो पहले2 यही सिद्धकर बताना है कि कृष्ण भगवानोवाच्य नहीं है ;परंतु शिव भगवानोवाच्य है। शिव ही पुनर्जन्ममरण रहित है। वो आते जो जरूर ;परंतु है उनका दिव्य जन्म। भगीरथ पर आकर सवार होता है। पतितों को आकर पावन बनाते हैं। रचता और रचना के आदि ,मध्य,आदि का राज समझाते हैं। जो ही नालेज और कोई नहीं

जानते। बाप को आप ही आकर अपना परिचय देना होता है। मुख्य बात है ही बाप के परिचय की। सर्वव्यापी अक्षर बहुत ग्लानीप्रद है। गीता से ही यह उठाया है और भागवत में दिखाये हैं कृष्ण के चरित्र। कृष्ण को भगवान समझने कारण ही यह सारी गड़बड़ हुई। कृष्ण का नाम ही निकल जावेगा तो बायोग्राफी ,चरित्र आदि सभी उड़ जावेंगे। गीता का भगवान कृष्ण नहीं है यह तुम सिद्ध करेंगे तो तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जावेगा। देहली में जो सेमिनार करेंगे पहले2 यह बात निकालनी पड़े। एरोप्लेन से पर्चे गिराने हैं। तो उसमें भी मुख्य2 यह बातें हों। गीता का भगवान शिव वा श्रीकृष्ण?एक गीता खंडन होने कारण सभी शास्त्र खंडन हो जावेंगे। इस गीता खंडन होने के कारण ही भारत इस हालत को पहुंचा है। वेद आदि कोई धर्म–शास्त्र नहीं है। आदि सनातन तो है ही देवी देवता धर्म। पीछे2 सभी मठ–पंथ निकले हैं। तो मीटिंग में पहले2 यही बात निकलो कि कौन सा ढंग निकालें जो बाप सिद्ध हो जावे। गीता में श्रीकृष्ण का नाम होने कारण ही लड़ाइयां आदि की बातें लिख दी हैं। गीता झूठी,महाभारत झूठा तो बाकी सभी शास्त्र झूठे हो जाते हैं। भारत की ही बात समझानी है। तो ऐसा पर्चा बनाकर उसमें चित्र भी लगाकर फिर एरोप्लेन से गिराने चाहिए। इसमें यह लिख दो कि इस कारण भारत कंगाल बना है। फिर बाप आकर राजयोग सिखाते हैं तो भारत स्वर्ग बनता है। चढ़ती कला होती है। फिर द्वापर में भक्तिमार्ग शुरू होता है। तो शास्त्र आदि पढ़ते2 उतरती कला हो जाती है। गीता को रांग सिद्ध करने से बाकी सब शास्त्र रांग हो जाते हैं। फिर बाप आते हैं। आकर राइटियस बनाते हैं। झूठी गीता पढ़ने कारण ही अनराइटियस बन जाते हैं। कृष्ण तो न ही ज्ञान सुनाते हैं, ना ही भक्ति करते हैं। वहां पर तो कुछ भी नहीं है। बाप मुख्य2 बातें समझाते रहते हैं। तुम्हारी मुख्य एक बात में ही जीत हुई तो बस तुमने जीत पाई। इसमें ही तुम्हारे नाम की बहुत वाह–वाह होनी है। इसमें कोई भी खिटपिट नहीं करेंगे। यह बहुत क्लीयर है। बाप कहते हैं मैं सर्वव्यापी कैसे हो सकता हूँ?मैं तो आकर बच्चों को नालेज सुनाता हूँ। पुकारते भी हैं कि आकर पावन बनाओ। रचता और रचना का ज्ञान सुनाओ। महिमा भी बाप की अलग,कृष्ण की अलग है। ऐसे नहीं कि शिवबाबा आकर कृष्ण वा ल.ना. बनते हैं। 84जन्मों में आते हैं। नहीं। तुम्हारी बुद्धि सारी यह बातें समझाने में ही लगी रहनी चाहिए। एक बात सिद्ध करने पर सब झूठे पड़ जायेंगे। मुख्य है ही गीता। भगवानोवाच्य है तो जरूर भगवान का मुख चाहिएगा ना। भगवान तो है ही निराकार। आत्मा मुख बिना बोले फिर कैसे?(तब)कहते हैं कि मैं साधारण तन का आधार लेता हूँ। जो कि पहले2 ल.ना. बनते हैं वो ही 84जन्म लेकर पिछाड़ी में आते हैं तो फिर उनके ही तन में आते हैं। कृष्ण के बहुत जन्मों के अंत में आते हैं। ऐसे2 विचार–सागर–मंथन करो कि कैसे किसी को भी समझावें। एक ही बात से तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा। रचता बाप का सबको पता पड़ जावेगा। फिर तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। सन्यासियों का आसन हिलेगा। फिर तुमको बुलावेंगे कि यहां पर आकर भाषण करो। इसलिए ही पहले2 अल्फ सिद्ध करके समझाओ। भगवान कृष्ण है वा शिव?यह मुख्य बात ही सिद्ध करनी है। तुम बच्चे ही जानते हो बाप से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाबा हर 5हजार साल बाद भारत में ही भागीरथ पर आते हैं। भाग्यशाली रथ। फिर बताते हैं कि यह है सौभाग्यशाली। जिस रथ में भगवान आकर बैठते हैं तो कोई कम बात है क्या। भगवान इनमें बैठकर बच्चों को समझाते हैं कि मैं बहुत जन्मों के अंत में इसमें प्रवेश करता हूँ। श्रीकृष्ण की आत्मा का रथ है ना। यह खुद कृष्ण तो नहीं है। बहुत जन्मों के अंत का शरीर है। हर जन्म में फीचर्स परिचय आदि बदलता रहता है। बहुत जन्मों के अंत में जिसमें प्रवेश करता हूँ वो फिर कृष्ण बनते हैं। अभी है संगमयुग। हम भी बाप का बनकर बाप से वर्सा लेते हैं। बाप पढ़ाते हैं फिर साथ ले जाते हैं। और कोई तकलीफ की बात ही नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं कि मामेकम् याद करो। तो यह अच्छी रीति विचार करना चाहिए कि कैसे2 लिखें। ....जिस कारण ही भारत अनराइटियस ,इररिलीजियस और इनसाल्वेंट बना है।

बाप फिर आकर राजयोग ....सिखाकर भारत को राइटियस सालवेंट बनाते हैं। सारी दुनियां को राइटियस बनाते हैं। उस समय तो सारे विश्व का मालिक तुम्हीं होते हो। कहते हैं ना कि यू लांग लाइफ एंड प्रॉपर्टी। बाप आशीर्वाद नहीं करते हैं कि सदा जीते रहो। यह तो साधु लोग कहते हैं कि अमर रहो। मीटिंग करते हैं तो बाप से राय पूछते हैं। बाबा ..... राय देते रहते हैं। सभी अपनी2 राय लिख भेजो। फिर भल इकट्ठे भी होवो। राय तो मुरली में लिख देने पर सबके ही पास पहुंच सकती है। 2/3हजार खर्चा होने से बच जावेगा। इस दो/तीन हजार से तो दो/तीन सेंटर्स खोल सकते हैं। गांव2 में जाना चाहिए चित्र आदि लेकर। आपस में ऐसे2 विचार निकालने चाहिए। अखबारों में भी छपवाओ। विलायत में भी तुम्हारा नाम इसी एक बात को जीतने पर होगा। कृष्ण तो मनुष्य हो गया ना। लार्ड मनुष्य को कहा जाता है। ना कि निराकार को। कृष्ण को भी लार्ड कह देते हैं। वास्तव में तो वो है देवता। उंच ते उंच है ही निराकार बाप। सूक्ष्मवतन की तो कोई बात ही नहीं। वो बाप रचता। फिर रचना है यहां। सूक्ष्मवतन की कुछ भी बात नहीं है। चित्र है तो उस पर थोड़ा समझाया जाता है। उनका भी बीच में थोड़ा पार्ट है। तुम जाते हो ,मिलते हो। बाकी और कुछ भी है नहीं। इसलिए ही उसमें जास्ती इन्ट्रेस्ट नहीं लिया जाता है। यहां पर आत्मा को बुलाया जाता है। उनको खिलाते हैं। कोई तो आकर रोते हैं। कोई तो प्रेम से मिलते हैं। कोई तो दुःख के आंसू बहाते हैं। यह सब ड्रामा में पार्ट है। जिसको चिटचैट कहा जाता है। वो लोग तो ब्राह्मण में कोई की भी आत्मा को बुलाते हैं। फिर उनको कपड़ा आदि पहनाते हैं। अब शरीर तो वो खतम हो गया। बाकी पहनेगा कौन? तुम्हारे पास तो वो रस्म नहीं है। रस्म की भी बात ही नहीं। तो उंच ते उंच हुआ बाप। फिर यहां पर सतयुग में ल. ना. का राज्य होता है। वो कैसे बने? जरूर बीच में संगमयुग है। जबकि पवित्र बनते हैं। तुम एक बात सिद्ध करेंगे कि यह तो बिल्कुल ठीक बताते हैं। भगवान कब भी झूठ थोड़े ही बता सकते हैं। फिर बहुतों का प्यार भी होगा। बहुत आवेंगे। समय2 पर बच्चों को प्वाइंट्स भी मिलती रहती है। पिछाड़ी में क्या2 होना है वो भी देखेंगे। लड़ाई लगेगी,बॉम्ब्स छोड़ेंगे। देखकर भी मरेंगे। पहले तो मौत है उस तरफ। यहां तो पहले खून की फिर दूध की नदियां बहनी हैं। सिविल वार लगती है तो फिर एक/दो को मारने ही लग पड़ते हैं। पहले2 आग विलायत से निकलेगी। डर भी वहां ही है। कितने बड़े2 बॉम्ब्स बनाते रहते हैं। क्या2 तो उसमें डालते हैं जो कि एकदम सारे शहर को स्वाहा कर देते हैं। बाबा ने समझाया है कि उंच ते उंच है भगवान। फिर सतयुग में है ल.ना. का राज्य। वो भी बताना है कि कैसे स्वर्ग की राजधानी स्थापन की। हैविनली गॉड फादर जरूर संगम पर ही आते हैं। तुम जानते हो कि अब संगम पर हैं। तुमको मुख्य बात तो समझाई ही जाती है बाप की याद की। जिससे ही पाप कटेंगे। भगवान जब आया था तो कहा था कि मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। मुक्तिधाम में जावेंगे। फिर एक से लेकर जन्मों का चक्र रिपीट होगा। पहले डीटीज्म,ईस्लामिज्म.....तुम स्टुडेंट्स की बुद्धि में सारी नालेज होनी चाहिए ना। खुशी रखनी है कि हम कितनी कमाई करते हैं। अब अमर कथा अमर शिवबाबा तुमको सुनाते हैं। .....अनेक नाम रख दिये हैं। द्रौपदीयां,दुःशासन भी यहां पर हैं। सब एक/दो को नग्न करते रहते हैं। स्वर्ग में तो यह नाम ही नहीं होते हैं। यहां ही कहते हैं कि बाबा हमको नग्न होने से बचाओ। यह भी बच्चों को समझाया है कि बाप संगम पर ही तीन धर्म ब्राह्मण ,देवता,क्षत्रिय स्थापन करते हैं। सतयुग की स्थापना कैसे होती है वो और कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं कि इसमें हिंसा की कोई बात नहीं है। दंतकथायें भक्तिमार्ग की तो बहुत हैं। इसमें तो .....की कोई बात नहीं है। मुख्य है देवता धर्म। फिर सबकी वृद्धि होते2 झाड़ बढ़ता ही जाता है।.....

गुडमार्निंग